अध्यापक विद्यालयों के छात्रों का व्यक्तित्व विकास और उनमेः मूल्यों का तुलनात्मक अनुशीलन

सौ.जमिला शौकत अल्ली मुल्ला
श्री.उदाजीराव ज्युनिअर कॉलेज ऑफ एज्युकेशन,
गारगोटी, जि.कोल्हापूर

प्राक्कथन -

भारतभूमि के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पार्श्वभूमी मुल्यशिक्षा की गहरी निंव हैं, तथा भारतीय संस्कृति का वह अभिन्न अंग हैं। ' मुल्य शिक्षा ' आज के समय की पुकार हैं और व्यक्तित्व विकसित करने के लिए उसका योगदान महत्वपुर्ण रहा हैं। अत्याधिक गुणोंकी वृद्धी करने का उसका सपना हमेशा सराहा गया हैं। सर्वोत्तम जीवन की अभिलाषा लेकर वह राष्ट्र निर्माण के लिए गुणसंपन्न नागरिकों के निर्माण कार्य में व्यस्त हो गया हैं। इन नागरिकों के लिए केवल गुणसंपन्न होना पर्याय नही, उनमें उँचे दर्जे की नैतिकता हो यह भी उसका एक उद्देश हैं। यह उद्देश पुरा करने अध्यापक ही योग्य व्यक्ती हैं। यह उद्देश पुरा करने अध्यापक ही योग्य व्यक्ती है । जो छात्र-छात्राओं के अधिक से अधिक गुणसंपन्न बना सकते हैं। तथा उनके व्यक्तित्व को चारित्र्य संपन्नता की दृष्टी से सही दिशा दे सकते हैं। ऐसे ही ध्यैयदृष्टिवाले अध्यापक शिक्षा क्षेत्र में होना जरुरी हैं।

1) समस्या विधान -

" अध्यापक विद्यालयों के छात्रोंका व्यक्तित्व विकास और उनमें मूल्यों का तुलनात्मक अनुशीलन।"

2) पदोंकी संकल्पनात्मक एवं कार्यात्मक परिभाषा- इनमें जो शिक्षक तैयार किये जाते हैं। वे प्राथमिक विद्यालयों में जाकर अध्यापक का कार्य करते हैं।

कार्यात्मक परिभाषा - प्राथमिक स्तर के बच्चों को पढाने की पात्रता निर्माण करनेवाली संस्था

i) छात्र

अध्यापक विद्यालयों में अध्ययन (विदयाभास) करनेवाला विद्यार्थी (छात्र)

कार्यात्मक परिभाषा -कला, वाणिज्य और शास्त्रशाखा से बारहवी वी उतीर्ण लडका तथा लडकी

ii) व्यक्तित्व

व्यक्ति में उन मनोशारीरिक प्रणांलियो का गतिशिल संगठण हैं, जो कि वातावरण के साथ उसके संपुर्ण समायोजन का निर्धारण करते हैं।

कार्यात्मक परिभाषा- 'व्यक्तित्व' एक व्यक्ति के व्यवहार के तरिको रुचियाँ दृष्टिकोणों, क्षमताओं, योग्यताओ तथा अभिरुचियां का सबसे विशिष्ट संगठण हैं।

iii) मूल्य -

व्यक्ति के नैतिक, बौब्दिक मानसिक और सौदर्यविषयक दृष्टीकोन के बर्ताव में होनेवाला परिवर्तन याने मूल्य ।

कार्यात्मक परिभाषा -मानव संस्कृति में समाविष्ट सदगुण का मतलब संस्कार

iv) अनुशीलन -

किसी भी विषय की जानकारी सुक्ष्मता से विस्तार से प्राप्त करने कि विधी को अनुशीलन कहा जाता हैं।

कार्यात्मक परिभाषा - अनुशीलन याने समीक्षा या आलोचना सूक्ष्मता से किए हुए अध्ययन को अनुशीलन कहा जाता हैं ।

3) अनुसंधान की आवश्यकता एवं महत्व -

अध्यापक विद्यालयीन छात्रों का व्यक्तित्व विकास मुल्यों के संक्रमण से संपन्न होता है। शिक्षाद्वारा व्यक्ती कार्य में सफल होता हैं। छात्रों के व्यक्तित्व के साथ मूल्य समाज की उन्नती होगी । जिसके द्वारा छात्रों की शारिरीक मानसिक सामाजिक तथा आध्यात्मिक शक्ती योंका विकास होता हैं। अध्यापक विद्यालयों के छात्रोंका विकास करके व्यक्तित्व तेजस्वी, बुद्धिमान, चरित्रवान, विदवान तथा वीर बनाना हैं। उसी प्रकार शिक्षा समाज की उन्नती के लिए आवश्यक साधन हैं। अध्यापक के व्यक्तित्वसे अध्यापक के व्यक्तित्वमें मूल्यसंक्रमण से छात्रों को प्रेरणा मिलगी। यह शिक्षा के माध्यम से अध्यापक कर सकते हैं। व्यक्तित्व के साथ मूल्यों का संक्रमण अध्यापक मे हुआ तो संपूर्ण समाज की उन्नती होगी । अतः स्पष्ट हैं कि आज के युग में अध्यापक विद्यालय आवश्यक हैं और इस बात को ध्यान में रखते शोधकर्ती ने अध्यापक विद्यालय से छात्रों के व्यक्तित्व विकास उनमें होनेवाले मूल्यों का तुलनात्मक अनुशीलन का विचार किया हैं।

अनुसंधान के उद्देश

1) अध्यापक विद्यालय के छात्रों के व्यक्तित्व विकास की जाँच करना।
2) अध्यापक विद्यालय के छात्रों का व्यक्तित्व विकास में मुल्यों की जाँच करना।
3) अध्यापक विद्यालय के छात्रों के व्यक्तित्व और मुल्यों का तुलनात्मक जाँच करना।
4) अनुदानित एवं अनुदानरहित छात्रों के व्यक्तित्व विकास का अध्ययन करना।
5) अनुदानित एवं अनुदानरहित शहरी एवं ग्रामीण छात्राओं के मनस्तापी व्यक्तित्व की जाँच करना

अनुसंधान की परिकल्पना-

1) अध्यापक विद्यालय के छात्र-छात्राओंके मनःस्तापी व्यक्तित्व में सार्थक अंतर हैं।
2) अध्यापक विद्यालय के अनुदानित एवं अनुदानरहित छात्रो के मनःस्तापी में सार्थक अंतर हैं।
3) अनुदानित एवं अनुदानरहित शहरी एवं ग्रामीण छात्राओं के व्यक्तित्व में सार्थक अंतर हैं।

अनुसंधान संबंधि चल -

1) स्वाश्रयी चल - अध्यापक विद्यालय के प्रथम वर्ष के छात्र
2) आश्रयी चल - व्यक्तित्व कसोटी, मूल्य कसोटी

अनुसंधान कार्य पद्धती

सर्वेक्षण पध्दती-

वर्तमान स्थिती कैसी है यह समझने के लिए अध्यापक विद्यालय के छात्रों मे प्रश्नावली के रुपमें जानकारी प्राप्त करने के लिए सर्वेक्षण पद्धती का चयन किया हैं।

अनुशीलन संबंधित साहित्य

1) वडवान महजबीन म असलम

उच्च माध्यमिक स्तर के हिंदी पाठ्यपुस्तक मे मूल्यशिक्षा का अनुशीलन शिवाजी विद्यापीठ, पी.एच.डी. 2003

2) मे श्री बना बिहारी (2006)

माध्यमिक स्तर के छात्रों की बुद्धिमता और शाला पृष्ठभुमि के आधारपर जाणीव जागृती का अध्ययन

3) वेदांते मधुकर

माध्यमिक स्तरा वरील पाठ्यपुस्तकांच्या अध्यापनाचा मुल्यशिक्षणाच्या संदर्भात चिकित्सक अभ्यास शिवाजी विद्यापीठ कोल्हापूर

4) डॉ. सरोज सक्सेना

शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय आधार आगया साहित्य प्रकाशन

5) चौधरी अर्जुन (2001) शिक्षण संक्रमण

मूल्य विकसित करने के लिए उपक्रमों की जानकारी प्राप्त हुई ।

अनुसंधान प्रदंत्त संकलन-

सामग्रीका विश्लेषण एवं अर्थ निर्वचन इस आध्याय में संकलित प्रदतों का विश्लेषण के लिए तथा अर्थनिर्वचन किया हैं। उचित सांख्यिकीय मापोंका विश्लेषण के लिए प्रयोग करते हुए अनुसंधानकी उपल्बधिंयाँ दी हैं।

अनुसंधान के निष्कर्ष -

1) अध्यापक विद्यालय के छात्र- छात्राओं के मनस्तापी व्यक्तित्व में सार्थक अंतर हैं।
2) अनुदानित व अनुदारहित अध्यापक विद्यालय के छात्रोंओ के मन :स्तापी व्यक्तीमत्व में सार्थक अंतर हैं।
3) अध्यापक विद्यालय के शहरी एवं ग्रामीण छात्रों के व्यक्तीमत्व में सार्थक अंतर है।
4) उच्च शैक्षणिक शहरी एवं उच्च शैक्षणिक ग्रामीण छात्रों का मनः स्तापी व्यक्तीमत्व में सार्थक अंतर नही हैं।
5) अनुदानित निम्न शैक्षणिक एवं अनुदानरहित निम्न शैक्षणिक छात्रा ओके मनः स्तापी व्यक्तीमत्व मे सार्थक अंतर है?

उपक्रमों का आयोजन

1) व्यक्तीमत्व विकास के लिए व्याख्यान -/ शिबीर
2) प्रशिक्षित कार्यक्रम
3) प्रतियोगता
4) व्याख्यान शृखंला
5) समाज प्रबोधन - उपक्रम

अनुसंधान के सिफारसी

1) आधुनिक युगमे मूल्यशिक्षा बहुत महत्वपूर्ण हैं।
अध्यापन के चर्चा, सेमिनार, प्रशिक्षण देना चाहिए।
2) अध्यापन करत समय मूल्यशिक्षा के प्रयोग करना ।

सुझाव : अध्यापक विद्यालयों के उपक्रमों के आयोजन संबंधी सुझाव

1) अच्छे उपक्रमों को प्रसिध्द करना चाहिए।

2) अच्छे कार्य करनेवालें अध्यापक विद्यालयों का उचित पुरस्कार देना चाहिए ।

3) उपक्रमों के साथ शैक्षणिक साधनों का उपयोग करना चाहिए।

4) ग्रामीण और शहरी अध्यापक विद्यालयो को हरसाल उचित पुरस्कार देना चाहिए ।

समारोप -

इक्कीसवे सदिमें शिक्षा प्रणाली मे परिवर्तन हो रहा है। इस बदलाव के साथ छात्रों का विकास हो रहा हैं। इस तरह व्यक्ती संपन्न होता है। व्यक्तित्व के साथ नितिमूल्यों का विकास होना जरुरी है।, इसलिए छात्रों के लिए मूल्यशिक्षा जरुरी है आवश्यक है। अध्यापक एक ऐसी व्यक्ती है। जिनमें आदर्श मूल्यों का संक्रमण हो जाने से जिम्मेदार बना है। उन्ही के संस्कारो से बहुत सारी पिढिंया ज्ञानी संस्कारशील बनेगी । अध्यापक विद्यालय में अध्ययन करनेवाले छात्र आनेवाले समयमे अध्यापक बनकर अध्यापन करनेवाले है। इसलिए अध्यापक विद्यालय के छात्रों का व्यक्तित्व और उनमें मूल्योंका अनुशीलन किया है।

छात्रों का निरीक्षण करते समय महसुस हुआ व्यक्तित्व संपन्न बनते समय मूल्यों का संक्रमण होता हैं।

संदर्भ सूची

1) मूल्य शिक्षा - लेखक डॉ. इ.एन, गावंडे **अनुवादक -** एन. जी. पवार
2) सोनी राम गोपाल " गोपाळ अध्यापक शिक्षा " - आगरा पब्लीकेशन
3) वास्तव डी,एन . " अनुसंधान विधियॉ"- आगरा - साहित्य प्रकाशन